Vol 6 Issue 2 March 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | March - 2016

भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या

रविदास अहिरवार
शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विवि. सागर (म.प्र.)

प्रास्ताविक

भ्रष्टाचार केवल भारत चीन और पाकिस्तान जैसे विकासशील देशो की समस्या नही बल्कि अनेक यूरोपीय देशों में भी इसका प्रभाव है समृद्ध विकसित देशों में भ्रष्टाचार की कल्पना तक नही की जा रही थी परन्तु अब जो तथ्य सामने आ रहें है वे महत्वपूर्ण तो है ही चिन्तनीय भी है इन दिनों जर्मनी के लोकप्रिय नेता व पूर्व चॉसलर पर भी रिश्वतखोरी का आरोप सिद्ध हो चुका है । फ्रांस में घोटाले के आरोपित वहां के राष्ट्रीय विधानसभा के स्पीकर को भी १८ महीने का कारावास दिया गया था रूस के राष्ट्रपति येल्तसिन की बेटी के स्विस बैंक के खाते में लाखो डालर जमा पाये गये।

डी.एच.बेली (D.H.baikey , cf,doughlas and jhonson,1971) ने भ्रष्टाचार को इस प्रकार बताया है :''निजी लाभ के विचार के परिणामस्वरूप सत्ता का दुरूपयोग जो धन सम्बन्धित नहीं भी हो सकता है । ''एन्ड्रिस्की (Indriski ,cf. machael clark, 1983) ने कहा है '' ऐसे तरीकों में सार्वजनिक श्शक्ति का निजि लाभ के लिए प्रयोग जो कानून का उल्लंघन करता है। ''मौरिस सैफेल (morris szeftel cf, machael Clarke, 1983) ने कहा है ''भष्टाचार वह व्यवहार है मानदण्डो और सार्वजनिक भूमिका निर्वाह के कर्त्तव्यों को संचालित करने या निजि लाभों के लिये पद के उचित उपयोग से विचलन होता है ।

''जे.नाय (J.nye,1967,410-) का कहना है '' कि भ्रष्टाचार निजि लाभों के लिये सार्वजनिक पद का दुरूपयोग दर्शाता है ।''

सामान्यतः आज भ्रष्टाचार का अर्थ रिश्वत या उसके किसी रूप से लगाया जाता है यद्यपि यह सत्य नही है क्योंकि भ्रष्टाचार तों अश्लीलता भी है गैर सालीनता भी है वैश्यावृति भी भ्रष्ट है। पुरूष या स्त्री को किसी भी प्रकार के दबाव में काम करवाना भी भ्रष्टाचार के अन्तर्गत आना चाहिए। भारत में भ्रष्टाचार की अपनी एक अलग अवधारणा है अवधारणा क्या दरअसल में यह एक ऐसा विचार है जिस पर विश्वविद्यालयों में एक नया विषय या संकाय ही खोला जा सकता है। समाज विज्ञान के कुछ विषयों जैसे अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान एवं अपराधशास्त्र आदि में भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में कुछ अध्याय पढाये जा रहे है। किन्तु ये कम है किसी सलिल सरिता की तरह तो नही किन्तु महानगर से निकलने वाले नाले की तरह भ्रष्टाचार सम्पूर्ण समाज को दूषित कर रहा है ।

रॉबर्ट के. मर्टन ने प्रकट तथा अप्रकट प्रकार्य में भेद करते हुए लिखा है कि प्रकट प्रकार्य प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने वाले वे परिणाम हैं जो सामाजिक व्यवस्था में अनुकूल तथा समायोजन लाते है एवं अप्रकट प्रकार्य वे परिणाम है जो सामाजिक व्यवस्था में समायोजन या अनुकूल तो लाते है परन्तु व्यवस्था के सदस्यो द्वारा न तो मान्य होते है न इच्छित।

उसी प्रकार सरकार कोई भी योजना गरीबों के हित में ध्यान रखकर बनाती है और उसको सचालन करती है लेकिन उसी व्यवस्था में सरकारी योजनाओं और गरीब व्यक्तियों के बीच कई लोग इसका गलत तरीके से फायदा उठाते है जिसे हम भ्रष्टाचार कह सकते है जो न तो सरकार को स्वीकार है और न ही समाज को ।

भ्रष्टाचार की दृष्टि से भारत वर्ष २००१ में ७२ पर रहा जबकि वर्ष २००० में भारत ६६ वे स्थान पर था । बर्लिन स्थित भ्रष्टाचार विरोधी गैर सरकारी संस्था ' ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल' ने जून २००१ में जो सूची जारी की उसमें फिनलैण्ड को सबसे कम भ्रष्ट राष्ट्र मानते हुए प्रथम स्थान दिया । जबकि बांग्लादेश को सूची में सबसे नीचे स्थान दिया एवं इग्लैण्ड को १३ वां अमेरिका को १७ वॉ एवं चीन को ६३ वॉ स्थान पर रखा इस सूची में कुल विश्व के ६१ देश सम्मिलित थे ।

२१ वी शताब्दी के विकासशील भारत में अनेक सरकारी योजनाऐं जो कि समाज के प्रत्येक वर्ग को ध्यान में रखकर तैयार एवं शुरू की गई एवं संचालित भी की जा रहीं है परन्तु इन योजनाओं का लाभ जितना आम व्यक्ति को हुआ उससे अधिक कहीं उन व्यक्तियों को भी लाभ हुआ है जिनको इन योजनाओं से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं था जिनमें सरकारी अधिकारी कर्मचारी और संसद में बैठे कानून बनाने वाले भी शामिल है इन सबकों गरीब की योजनाओं और गरीब की थाली के भोजन की चिन्ता नहीं परन्तु अपने कमीशन और काला धन समेटने की चिन्ता है जो आये दिन देखनें को मिल रहीं है आखिर जो करोड़ों रूपयों के घोटाले जो सामने आयें है वह पूरा का पूरा पैसा सिर्फ गरीब के हिस्से का है लेकिन इस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है।

आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन सिर्फ स्वार्थ तक ही सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे चाहे वह गरीब का हो या समाज का हो स्वार्थ प्रमुख हो गया है। समाज में अनैतिकता अराजकता और स्वार्थ से युक्त भावनाओं का बोलबाला हो गया है। परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा नैतिक स्वरूप धुंधला सा हो गया है इसका एक मात्र कारण है समाज में फैल रहा भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टाचार के इस विकराल रूप को धारण करने का सबसे बड़ा कारण यहीं है इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है । कमरतोड़ महंगाई भी इसका एक प्रमुख कारण है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरा करने के लिए मनचाहें तरीकों को अपना रहा है। भारत के अन्दर तो भ्रष्टाचार का फैलाव दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। किसी भी क्षेत्र में चलें जाऐ भ्रष्टाचार का फैलाव दिखाई देता है । भारत के सरकारी व गैर सरकारी विभाग इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है। आप अपना कोई भी काम करवाना चाहते है तो बिना रिश्वत खिलाये काम करवाना संभव नहीं है। मंत्री से लेकर संतरी तक को आपको अपनी फाइल बढ़वाने के लिये पैसे का उपहार चढ़ाना ही होगा। स्कूल व कॉलेज भी इस भ्रष्टाचार से अछूते नहीं है। बस इनके तरीके दूसरे है। गरीब परिवारों के बच्चों के लिये शिक्षा सरकारी स्कूलों व छोटे कॉलेजों तक सीमित होकर रह गई है। नामी स्कूलों में दाखिला कराना हो तो डोनेशन के नाम पर मोटी रकम मांगी जाती है। बैंक जो की हर देश की अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ है वे भी भ्रष्टाचार के इस रोग से पीड़ित है। आप किसी प्रकार के लोन के लिये आवेदन करें पर बिना किसी परेशानी के फाइल निकल जाए यह तो संभव नहीं हो सकता है। देश की आंतरिक सुरक्षा का भार हमारे पुलिस विभाग पर होता है परन्तु आए दिन यह समाचार आते रहते है की आमुक पुलिस अफसर ने रिश्वत लेकर एक गुनाहगार को छोड़ दिया। भारत को यह भ्रष्टाचार खोखला बना रहा है।

भारत के प्रमुख घोटाले :–

- बोफोर्स घोटाला - ६४ करोड़ रूपये
- यूरिया घोटाला - १३३ करोड़ रूपये
- चारा घोटाला - ६५० करोड़ रूपये
- शेयर बाजार घोटाला - ४००० करोड़ रूपये
- सत्यम घोटाला - ७००० करोड़ रूपये
- स्टॉप पेपर घोटाला - ४३ हजार करोड़ रूपये
- कॉमनवेल्थ गेम्स घोटाला - ७० हजार करोड़ रूपये
- २जी स्पेक्ट्रम घोटाला - २ लाख करोड़ रूपये (अनुमानित)
- अनाज घोटाला - २ लाख करोड़ रूपये (अनुमानित)
- कोयला खदान आवंटन घोटाला - १६२ लाख करोड़ रूपये

हमें हमारें समाज में फन फैला रहें इस विकराल नाग को मारना होगा। सबसे पहलें आवश्यक है प्रत्येंक व्यक्ति के मनोंबल को ऊँचा उठाना होगा प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुऐ अपनें को इस भ्रष्टाचार से बाहर निकालना होगा। यही नही शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य ज्ञान को आवश्यक सुविधाएँ भी सुलभ करनी होगी इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है ।

सरकारी योजनाओं के प्रति व्यक्ति का जहाँ एक ओर अपना रूझान बढ़ा है वही दूसरी ओर उससे अधिक वह इन योजनाओं से दूर भी होता जा रहा है इसके कई कारण भी है जो कुछ इस प्रकार से देखा जा सकता है।

मार्क्स का अनगाव सिद्धांत–

मार्क्स का मानना है कि मानव इतिहास के दो पक्ष है : प्रथम यह व्यक्ति का प्रकृति पर अधिकाधिक नियत्रण का इतिहास है और दूसरा यह व्यक्ति के अधिकाधिक अलगाव का सिद्धांत भी है । कार्ल मार्क्स अनुसार अलगाव व्यक्ति की वह दशा है जिसमें उसके अपने कार्य एक पराई शक्ति बन जाते है।

मार्क्स कहता है कि प्राचीन समय में मनुष्य अपने हाथों और औजारों से उत्पादन करता था न कि मशीनों से इसलिए उसका उत्पादन के साधनों और उत्पादित वस्तुओं और ग्राहकों से सीधा सम्बन्ध होता था। एवं उत्पादन करने पर उसे सन्तोष प्राप्त होता था। किन्तु वर्तमान में इसका उल्टा हो गया है। व्यक्ति अपना श्रम करता है और उसका मूल्य सरकार के द्वारा निर्धारित किया जाता है व्यक्ति को नहीं मालूम होता कि वह कितने मूल्य का कार्य कर रहा है।

आज जितनी भी सरकारी योजनायें संचालित हो रहीं है उनमें मशीनों की उन्नति मानव श्रम को काफी कुछ अनावश्यक बना देती है। जहाँ सरकारी योजनाओं के माध्यम से सरकार गरीब व्यक्ति समाज को मजबूत करना चाहती है वही मशीनीकरण उस समाज को विकंलाग बना रहीं है जिससे व्यक्ति सरकारी योजनाओं के प्रति अपने को अलग समझता है, । और इसी अलगाव का फायदा पूँजीवादी लोग उठाकर लगातार भ्रष्टाचार की श्रृखला बना रहें है।

भारत सरकार की महात्वाकांक्षी योजना '' महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना'' की बात करते है तो हम पाते है कि इस पूरी योजना में प्रत्येक परिवार को १०० दिन रोजगार देने का प्रावधान है एवं मशीनीकरण का उपयोग पूर्णतः वर्जित है लेकिन इस योजना में भी भ्रष्टाचार ने अपनी जगह बना ली है जिसकी जड़े दिन प्रति दिन गहरी होती जा रही है। अगर द्वितीय स्रातों समाचार पत्र एवं पत्र-पत्रिकाओं की माने तो ऐसा लगता है भारत में भ्रष्टाचार नहीं भ्रष्टाचार में भारत है क्योकि आज तक ऐसी कोई योजना जो पूर्ण रूप से बिना भ्रष्टाचार के सफल हो गई हो यहां तक कि खेल जैसे आयोजनों में भी भ्रष्टाचार होता है जो समाज के लिये शर्म की बात है ।

मैक्स वेबर ने सामाजिक क्रिया के माध्यम से तार्किक क्रिया का उल्लेख करते हुए कहा है कि तार्किक क्रिया का सम्बन्ध किसी लक्ष्य के साथ होता है । एक पुल का निर्माण करते समय एक इन्जीनियर की क्रिया धन कमाने के लिए प्रयत्नशीन व्यापारी की क्रिया तथा युद्ध में सफलता प्राप्त करने के प्रयत्न में लगे हुए सैनिक अधिकारी की क्रिया इसी श्रेणी में आती है।

यही रूप हमारे वर्तमान सामाजिक परिवेश में देखने को मिल रहा है जहाँ देखो वही समाज/व्यक्ति अपना एक निश्चित उद्देश्य बनाकर बैठा है कि उसको सिर्फ अपना भला करना है न कि समाज का चाहे वह अच्छा हो या फिर बुरा व्यक्ति अपना अधिक से अधिक लाभ कमाने के चलते दूसरों के हित का ध्यान नहीं रखता और यहीं कारण है जिस भ्रष्टाचार की बात हम ऊपर कर चुके है कि आखिर मनुष्य मनुष्य इतना खुदगर्ज. इतना करप्ट क्यों बन गया है उसमें ईमानदारी का भाव क्यों नही रहा । और फिर उसमें प्रेम भाव क्यों घट रहा है हमें केवल कर्म ही नही करना है बल्कि हम सबको मिल जुलकर यह पता लगाना है कि इस मानवीय दुर्दशा का कारण क्या है क्यों भला हम अधिकाधिक स्वार्थी बनते जा रहे अधिकाधिक बेईमान अधिकाधिक अंधविश्वासी और इस दुनिया से डरे-डरे से है ।

असली भ्रष्टाचार कही अधिक गम्भीर होता है भ्रष्टाचार मन के भीतर होता है अपने फायदे की खातिर विचार का प्रयोग है भ्रष्टाचार तब होता है जब मानस में ही अतर्विरोध होता है तब अंतर्द्वद होता है और वह लंबे समय तक चलता रहता है तब वह भ्रष्टाचार को वढावा देता है ।अगर विकासशील आजाद भारत के हालात ऐसे ही रहे और भ्रष्टाचार के प्रति जनता समय रहते अपने अधिकारों के प्रति सचेत नही हुई तो सरकारी योजनाएँ एवं गरीबी से छुटकारा पाने वाली योजनाएँ जो समाज कल्याण में चलाई जा रही है वे सिर्फ बनेगी और वही कागजो में पूरी हो जायेगी और गरीब जनता उस लाभ से वंचित रहेगी अतः समाज के इस भंयकर रोग भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को आगे आना होगा तभी एक सच्चे राष्ट्र निर्माण की भूमिका होगी ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

१. झा. सी. एम.-२००४ भष्टाचार समस्या और समाधान.राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
२. सिंह निर्मल कुमार-२०००. अपराध और भ्रटाचार की राजनीति.वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
३. उरमलिया श्रवण कुमार-१६६७ भ्रष्टाचार की तलास चन्द्रमुखी प्रकाशन
४. राजकिशोर-२००६ नैतिकता के नये सवाल वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
५. सिन्हा सच्चिदानंद-२००७ लोकतंत्र की चुनौतियाँ. वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
६. त्रिवेदी.डॉ आर.एन. डॉ.एम.पी.राय-२०१०२ भारतीय सरकार एवं राजनीति-कॉलेज वुक डिपो जयपुर. पृष्ठ क्र.५०६
७. राजपूत एन.एस.-२०१३ राष्ट्रीय मासिक पत्रिका मधुर माधुरी. १४४ कोटरा ग्राम कोटरा सुल्तानावाद भोपाल
८. कृष्णमूर्ति जे. २०११ भ्रष्टाचार टुडे दिसम्बर-२०११. कृष्णमूर्ति फाउडेशन इण्डिया-पृष्ठ क्रमांक.१२-२१

9. Choudhry P.C. corruption in seminar no.421 septemer 1994
10. Santhnam committee report on prevention of corruption government of india 1964
11. Malhotra K.L.Facets of vigilance malhotra publications delhi 1988

रविदास अहिरवार
शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विवि. सागर (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org